JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दी साहित्य में समाहित प्रकृति का सुन्दर चित्रण

श्रीमती सुधा मिश्रा*
शिक्षिका पोदार इंटरनेशनल स्कूल , इंदौर

डॉ पद्मश्री शर्मा, एच. ओ. डी. सेज यूनिवर्सिटी, इंदौर, म. प्र.,

सारांश – वर्तमान में चारों ओर फैले हुए प्रदूषण को कम करने के लिए विभिन्न वैज्ञानिकों एवं पर्यावरणविदों के समान ही हिन्दी साहित्य काव्य परंपरा में कवियों का महत्वपूर्ण योगदान है। इन्होंने निरंतर साहित्य के माध्यम से पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने का प्रयास कर, अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया है। इन सबके पश्चात् भी प्रदूषण निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। अतः इस और कुछ ठोस कदम उठाए जाने चाहिए तथा कठोर प्रयास किये जाने चाहिए और अपनी नैतिक जिम्मेदारी को स्वीकारते हुए अधिक-से-अधिक लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

प्रकृति ने हमें जीने के लिए बहुमूल्य सुविधाएँ प्रदान की हैं। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम इसका संरक्षण करें। इसके बारे में कवि श्री जीतेन्द्र जलज कहते हैं कि –

"जब भी जिसने जो भी माँगा प्रकृति ने अपने हाँथ को संकुचित किये बिना सब कुछ और सही समय पे दिया।" परन्तु फिर भी हम प्रकृति को प्रदूषण मुक्त पर्यावरण नहीं दे सकते।

श्री रुपेश कन्नोजिया जी प्रकृति की आवश्यकता तथा सुंदरता की तुलना माँ से की है। वे कहते हैं कि –

"प्रकृति तो हमेशा ही मेरी सुन्दर माँ जैसी है।
गुलाबी सुबह से माथा चूमकर हँसते हुए उठती है।
गर्म दोपहर में ऊर्जा भरके दिन खुशहाल बनाती है।
रात की चादर में सितारे भरकर मीठी नींद सुलाती है।
प्रकृति तो हमेशा ही मेरी सुन्दर माँ जैसी है।"

काव्य में कोयल के माध्यम से भी विश्व के समस्त जीव-जंतुओं के आवास की समस्या के बारे में ध्यान आकर्षित करने की चेष्टा की गई है।

सूर्य के ताप में वृद्धि, नदियों का प्रदूषित होना, वनों का नष्ट होना तथा प्रदूषित होता वातावरण आदि अनेक विषयों पर कवियों ने काव्य पंक्तियों के माध्यम से समय-समय पर समाज में जागरूकता लाने का प्रयास किया है।

विश्व स्वस्थ्य संगठन के आंकड़ों के आधार पर हमें कुछ बातों पर विचार करने की आवश्कयता है। जिसमें कहा गया है कि आज पर्यावरण प्रदूषण इतना अधिक बढ़ चुका है कि साँस लेने के लिए शुद्ध वायु मिल पाना भी कठिन हो गया है। यह स्थिति केवल भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी यही स्थिति बनी हुई है। आज भारत की सभी मुख्य तथा बड़ी नदियाँ प्रदूषित होती जा रही हैं। पर्वतों-पहाड़ों को खोदकर समतल बनाया जा रहा है। जंगलों को काटकर साफ कर दिया गया। मनुष्य ही नहीं अपितु जानवरों के लिए भी जीना मुश्किल हो गया है। वन्य जीवों को मारा जा रहा है। उनकी देखरेख की किसी को कोई चिंता ही नहीं है। मनुष्य अपने स्वार्थवश इतना अँधा हो गया है कि उसे प्रकृति की कोई परवाह ही नहीं है।

वैदिक काल के चिंतक, कवि तथा कथा व साहित्यकार प्रकृति के महत्त्व से भलीभांति परिचित थे। इसी सन्दर्भ में वेदों में कहा गया है कि –

"पूर्णभदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।"

बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण के कारण मानव जीवन संकट में पड़ गया है। उपभोक्तावादी प्रवृत्तियाँ, भूमण्डलीकरण, औद्योगीकरण एवं पूँजीवाद आदि कुछ ऐसे तत्व हैं, जिनकी वजह से पर्यावरण संकट में है। जीवन एवं पर्यावरण संकट इस सदी की कुछ प्रमुख चुनौतियाँ हैं। बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण के कारण अनेक बीमारियाँ फैल रही हैं एवं इस वजह से मानव जीवन संकट में है। इसका बहुत बड़ा कारण है, प्राकृतिक तत्वों का अत्यधिक दोहन। पूँजीवादी प्रवृत्ति व औद्योगीकरण के कारण प्रकृति को बहुत अधिक नुकसान उठाना पड़ रहा है।

मनुष्य ने अपनी सुख-सुविधाओं के लिए प्रकृति पर प्रभुत्व स्थापित करने की जो नीति अपनाई है, उसके भयंकर परिणाम की ओर संकेत करते हुए एंगिल्स ने अपनी पुस्तक 'डायनेसी ऑफ़ नेचर' में स्पष्ट लिखा है- "हमको इस बात से संतुष्ट नहीं होना चाहिए कि मनुष्य प्रकृति के ऊपर विजय प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार की प्रत्येक विजय के लिए प्रकृति हमसे बदला लेती है।" अत्यधिक उपभोगवाद की मानसिकता के चलते प्रकृति को बहुत नुकसान हो रहा है, जिसका परिणाम भयावह बीमारियाँ एवं प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन है।

शब्दावली/संकेत शब्द- प्रकृति, उपभोक्तावादी प्रवृत्तियाँ, हिन्दी साहित्य, मानसरोवर, भूमण्डलीकरण, आकर्षक, औद्योगीकरण, कल्पना शक्ति, काव्यमय, मेघदूत, अस्तित्व एवं पूँजीवाद।

प्रस्तावना –

हिन्दू धर्म में उस परम पिता परमेश्वर को सर्व शक्तिशाली मानकर बहुत महत्त्व दिया गया है। इनसे संबंधित अनेक काव्यों की रचना की गई, जिसमें ईश्वर एवं प्राचीन मान्यताओं की चर्चा की गई है।

विष्णु का वाहन गरुण को माना गया है। धर्म शास्त्रों में वृक्षों में देवताओं का वास माना गया है। ऐसा कहा जाता है कि पीपल में भगवान विष्णु का वास है। श्रीमद्भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं कहा है कि-

"वृक्षों में मै पीपल हूँ।"

इसलिए प्राचीन काल में लोग वृक्षों की पूजा करते थे। यहाँ तक कि आधुनिक काल में भी लोग वृक्षों की पूजा करते हैं। केवल पीपल ही ऐसा वृक्ष है कि जो दिन में प्राणवायु (ऑक्सीजन) देता है। केला, आँवला, नीम, पीपल, तुलसी, वटवृक्ष आदि की भी पूजा का विधान है।

ब्रम्हा चतुरानन हैं। उन्हें सृष्टि कर्ता व शिव को आराध्य देव माना गया है। प्रकृति को देवी मानकर उसकी पूजा का विधान है। हिन्दुओं के जीवन में अनेक सम्प्रदायों की प्रभुता है, फिर भी उन्होंने प्रभु श्री राम को मन में बिठाया है तथा प्रभु श्री राम का नाम आज सदाचरण का प्रतीक बन गया है।

"अमल धवल गिरी के शिखरों पर,

बादल को घिरते देखा है।।

छोटे-छोटे मोती जैसे,

उसके शीतल तुहिन कणों को,

मानसरोवर के उन स्वर्णिम,

कमलों पर गिरते देखा है।।

बादल को घिरते देखा है।।"

'नागार्जुन' रचित 'मानसरोवर' की इन पंक्तियों में हिमालय की ऊँची चोटियाँ बर्फ से ढँकी रहती हैं। उन बर्फ से ढँकी सुन्दर चोटियों पर घिरे हुए बादलों की सुंदरता को कवि ने बड़े सुन्दर ढंग से दर्शाया है। छोटी-छोटी ओस की बूंदों को मोतियों के समान माना गया है। ये मानसरोवर के सुन्दर रंग के कमलों पर गिरती हैं तो बहुत ही सुन्दर व मनमोहक लगती हैं। वे सुनहरे कमल और अधिक आकर्षक हो जाते हैं। इसी प्रकार से कवि ने कहा है कि-

"तुंग हिमालय के कन्धों पर,

छोटी-बड़ी कई झीलें हैं।। "

उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने पर्वतीय प्रदेश में बादलों के घिरे होने तथा वहाँ पर झीलों में तैरते हुए हंसों के सौंदर्य का काव्यमय वर्णन किया है। इसी प्रकार से –

"ऋतु वसंत का सुप्रभात था,

मंद-मंद था अनिल बह रहा।।

बालरूप की मृदु किरणें थीं,

अगल-बगल स्वर्णाभ शिखर थे।। "

इस प्रकार से इस कविता में कवि की कल्पना शक्ति भाषा की दृष्टि से कालिदास और निराला जी के काव्य परंपरा को निभा रही है।

कामायनी एक महाकाव्य है। इसके रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं। इस महाकाव्य में कवि ने मानव सृष्टि के आदि से अब तक के जीवन का मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास का वर्णन किया है। इसमें कवि ने जगत को कल्याण भूमि के रूप में दर्शाया है। इसमें प्रकृति के सुन्दरतम रूपों का वर्णन किया गया है।

और देखा वह सुन्दर दृश्य,

नयन का इंद्रजाल अभिराम।।

कुसुम- वैभव में लता समान,

चन्द्रिका से लिप्त घनश्याम।।

तथा

जलधि से फूटें कितने उत्स,

द्वीप कच्छप डूबें -उतरायें।।

किन्तु वह खड़ी रहे दृढ मूर्ति,

अभ्युदय का कर रही उपाय।।

इस प्रकार प्रसाद ने कामायनी में प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है।

केदारनाथ सिंह के काव्य में पर्यावरणीय चिंता-

श्री केदारनाथ जी ने जीवन एवं प्रकृति के आनंद के गीतकार के रूप में अपने काव्य जीवन की शुरुआत की थी। उनकी काव्य संवेदना अत्यंत विशेष थी। वे समय के पारखी कवियों के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने सम-सामयिक कविताओं की रचना की है। उनकी कविताएँ इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों का स्पष्ट रूप से समर्थन करती हैं।

उद्देश्य-

<u>ऋग्वेदीय आदित्य देवता-</u>

वैदिक काल में आकाश से संबंधित दिव्य शक्तियों के कारण सूर्य अर्थात आदित्य का अत्यधिक महत्त्व है। यह एक गण देवता हैं। रश्मियों द्वारा यह प्रकाश को ग्रहण करता है। सूर्य के निकलने पर चन्द्रमा, तारे आदि प्रकाशहीन हो जाते हैं।

सूर्य को अदिति का पुत्र (अदिति का अपत्य) कहा गया है। अगर अध्यात्मिक दृष्टि से देखा जए तो सूर्य समस्त सृष्टि का संचालन करता है। यह इंद्र तथा अग्नि से भिन्न होते हुए भी उनमे विद्यमान है। अध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाए तो यह धरती पर परम पिता परमेश्वर का प्रतिरूप है। सूर्य को देखकर मनुष्य को उस परम पिता परमेश्वर की शक्ति, सर्वव्यापकता तथा तेज का आभास होता है।

सूर्य का वैज्ञानिक स्वरुप - सूर्य का वैज्ञानिक स्वरुप भी है। सूर्य प्रकाश का स्रोत तो है ही, साथ-ही-साथ यह सृष्टि का कर्ता, पर्यावरण का रक्षक, प्रदूषण का नाशक एवं सभी पदार्थो को रंग-रूप आदि देने वाला है।

संसार की आत्मा - सूर्य को संसार की आत्मा कहा गया है। सूर्य की ऊर्जा से ही सारे जीव-जगत तथा वनस्पतियों आदि को जीवन प्राप्त हुआ है। जिस प्रकार पूरी प्रकृति तथा प्राणिजगत गतिशील है, उसी प्रकार से सूर्य भी गतिशील है तथा निरंतर घूमता रहता है। समस्त चर-अचर जगत की गति, प्रगति तथा विकास सूर्य की ऊर्जा से ही संभव है।

रोग नाशक - सूर्य को रोग नाशक भी कहा गया है। सूर्य में औषधीय गुण भी विद्यमान हैं। ऐसा माना जाता है कि सूर्य की किरणों में इतनी शक्ति है कि वह प्राणियों में जीवन का संचार भी कर सकती है। ऋग्वेद में सूर्य से सारे रोगों की चिकित्सा का वर्णन भी मिलता है।

सात प्रकार की ऊर्जा - सूर्य की किरणों में सात प्रकार की ऊर्जा है। प्रत्येक किरण रंग अलग-अलग है। इस ऊर्जा से अन्न तथा ऊर्जा दोनों को प्राप्त किया जा सकता है। अतः सूर्य को परम ज्योति के रूप में देखा गया है, जो कि ईश्वर की शक्ति का अहसास कराता है।

ऋग्वेद अग्नि वेदांतक सूक्त-

अग्नि का वैज्ञानिक स्वरुप - ऋग्वेद में अग्नि के वैज्ञानिक स्वरुप की चर्चा की गई है। अग्नि सृष्टि के मूल में विद्यमान है तथा यह सर्व शक्तिमान भी है। अथर्ववेद में अग्नि को संसार का पोषक अर्थात पोषण करने वाला कहा गया है। वैज्ञानिक भाषा में तेजोविकिरण की चर्चा भी मिलती है। अग्नि को साधारण नहीं कहा जा सकता है, सूर्य की ऊर्जा हमको अग्नि के रूप में भी प्राप्त है। यह संसार के सभी छोटे-से-छोटे कण में भी विद्यमान है।

निष्कर्ष-

अपनी कविता के माध्यम से बाजार में पानी की उपलब्धता पर केदारनाथ सिंह प्रश्न खड़ा करते हुए उस रहस्यमय स्रोत की ओर इशारा करते हैं, जहाँ से लुप्त होने की कगार में पहुँच जाने के बावजूद पानी बाज़ारों में पहुँच रहा है। केदारनाथ सिंह ने 'बाघ' कविता के माध्यम से पर्यावरण के नुकसान का एक कारण बढ़ता हुआ मशीनीकरण भी बताया है। केदारनाथ जी ने इस ओर भी संकेत किया है कि हम सुविधाओं की होड़ में इतने अंधे हो चुके हैं कि प्रकृति की ओर कोई ध्यान ही नहीं है एवं दिन-प्रतिदिन प्रकृति को हानि पहुँचा रहे हैं। प्रकृति के विनाश के कारण पशु-पक्षियों का जीवन भी सुरक्षित नहीं है।

मेघदूत, महाकवि कालिदास द्वारा रचित एक महाकाव्य है। मेघदूत की लोकप्रियता भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से ही है। इसमें काव्य के नायक ने अपना सन्देश अपनी प्रेमिका की याद में बादलों के माध्यम से भेजने का प्रयास किया है।

श्री केदारनाथ जी की कविता में गीतकार का उल्लास, नीरस जीवन के अस्तित्व के खोज तक की उनकी कविता में विराट स्वरुप का विस्तार स्पष्ट दिखाई देता है। हमारे धर्म ग्रंथों तथा वेदों में प्रारम्भ से ही प्रकृति से संयमित उपयोग एवं संरक्षण की बात कही गई है।

सन्दर्भ सूचि-

[1] (सी. एस. मुखोपाध्याय)

[2] (यादव)

[3] (मकर संक्रांति पर सूर्य की गति बढ़ने से बढ़ती है हमारी ऊर्जा)

[4] (कुमार)

[5] (संवाददाता, जीवों की रक्षा का घोषणा पत्र इंदौर से होगा जारी, देशभर के पर्यावरणविद जुटेंगे)

[6] (दुबे)

[7] (प. ज. सेन, सांसों के साथ औषधि, शांति और ख़ुशी देते पेड़, इसलिए पूजनीय)

[8] (श्रोती)

[9] (कुमारी)

[10] (तिवारी)

[11] (डॉ. सत्येंद्र प्रकाश)

[12] (रघुरामन)

[13] (नुजेंट)

[14] (जावेद)

[15] (जोशी)

[16] (संवाददाता, हरियाली का ३०% हिस्सा शहरी वनों के रूप में तैयार हो)

[17] (प. ज. सेन, ऊर्जा के केंद्र बिंदु पर बनते हैं मंदिर, मिलती है आत्मशांति)

[18] (प. ज. सेन, हम धर्मस्थलों पर जाते हैं क्योंकि ऊर्जा के केंद्र बिंदुओं पर बनते हैं मंदिर, मिलती है आत्मशांति)

[19] (सिंह)

[20] (ड. म. त्रिवेदी)

[21] (ड. म. त्रिवेदी, sahityapedi. com)

[22] (भोपाल सिंह)

[23] (प्रसून)

[24] (भाटिया)

[25] (चंदोला)

[26] (गुप्त)

[27] (बनवारी, पंचवटी भारतीय पर्यावरण परंपरा)

[28] (दीप्ति शर्मा)

[29] (तुलसीदास)

[30] (ड. म. त्रिवेदी, sahityapedi.com)

[31] (व्यास)

[32] (चुघ)

[33] (राजवंशी)

[34] (प्रसाद)

[35] (कालिदास)

[36] (संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरणीय चिंतन वर्तमान सन्दर्भ में)

[37] (शर्मा)

[38] (मणि)

[39] (डॉ एस अखिलेश)

[40] (बनवारी, पंचवटी , भारतीय पर्यावरण परंपरा)

[41] (सिंघल)

[42] (डॉ. चुघ)

[43] (कुमारी)

[44] (कुमार)

[45] (कालिदास)

[46] (स. क. तिवारी)

[47] (डॉ. सत्येंद्र प्रकाश)

[48] (भाटिया)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि-

कुमार, जलज. "ऋग्वेदीय आदित्य देवता की वैज्ञानिक विशेषताएँ." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिन्दी रिसर्च (2017): 61,62.

कुमारी, रेखा. "ऋग्वेदीय अग्नि वेदान्तक सूक्तों में प्रतिपादित वैज्ञानिक तथ्य." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिन्दी रिसर्च (2017): 62-65.

जावेद, डॉ सीमा. "एशिया के वाटर टावर से लेकर ग्रेट बैरियर रीफ तक खतरे में है." दैनिक भास्कर (2022): 8.

जिल लेंगलोइस, साओ पालो. "ब्राजील की 91 वर्षीय फोटोग्राफर अमेजन के वर्षा वनों को बचा रहीं." दैनिक भास्कर (2023): 10.

जोशी, डॉ अनिल प्रकाश. "प्रकृति को बचाने के लिए हमें अपनी प्रवृत्ति सुधारनी होगी." दैनिक भास्कर (2022): 8.

डॉ. सत्येंद्र प्रकाश, राघवेंद्र प्रकाश. "समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चिंतन का अनुशीलन." (2017): 112-115.

तिवारी, सुशील कुमार. "केदारनाथ सिंह के काव्य में पर्यावरणीय चिंता." (2016): 9.

दुबे, अभिषेक. "प्रकृति के बीच इंजीनियरिंग की क्लास ,SGSITS ने रिनोवेशन वर्क में 100 साल पुरानीईमारत टूटने से बचाकर उसे बना दिया नेचर क्लब,." दैनिक भास्कर (2022).

नुजेंट, सिआरा. "यूरोप में पर्यावरण की रक्षा के लिए कंस्ट्रक्शन कम करने का अभियान." दैनिक भास्कर (2022): 10.

भास्कर न्यूज, झाबुआ. "८७० करोड़ लीटर वर्षा जल हर साल सहेज रहे, १६० माता-वन में खड़े कर दिए पाँच लाख से अधिक पेड़." दैनिक भास्कर (2023): 9.

यादव, किरण यादव. "महाकवि कालिदास का मानव जीवन एवं प्राकृतिक वर्णन का तुलनात्मक अध्ययन." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिंदी रिसर्च (2017): 1-5.

रघुरामन, एन. "पानी अगला खतरा और अगला अवसर भी." दैनिक भास्कर (2023): 9.

रिसर्च, भास्कर. " एक इलेक्ट्रिक कार बनाने में लगभग ४ हजार किलो घातक कचरा और ९ टन कार्बन पैदा होता है, १३ हजार लीटर पानी भी खर्च होता है." दैनिक भास्कर (3 जुलाई 2022): 1.

श्रोती, वंदना. "प्रदेश का पहला ऐसा पार्क बनेगा एकांत जहाँ बढ़ेगा ऑक्सीजन इंडेक्स और दूर होगा वाटर पॉल्यूशन." दैनिक भास्कर (2022): 5.

संवाददाता, भास्कर. "जीवों की रक्षा का घोषणा पत्र इंदौर से होगा जारी, देशभर के पर्यावरणविद जुटेंगे ." (2022).

—. "ये अच्छा आईडिया है ! आबोहवा सुधारने १०० बगीचे बनाएंगे ." दैनिक भास्कर (2022).

—. "हम सफाई के विश्व गुरु! फ्रांस में दिखाई जाएगी स्वच्छता की तस्वीरें, 7 देशों के 21 सदस्यों ने शहर देखा, बोले- अब प्रदूषण ख़त्म करने पब्लिक ट्रांसपोर्ट अपनाए इंदौर." दैनिक भास्कर (2022): 2.

—. "हरियाली का ३

इंदौर, सिटी रिपोर्टर. "80% अनाज मधुमक्खियों द्वारा किये जाने वाले पोलीनेशन से पैदा होता है." दैनिक भास्कर (2023): 21.

कुमार, जलज. "ऋग्वेदीय आदित्य देवता की वैज्ञानिक विशेषताएँ." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिन्दी रिसर्च (2017): 61,62.

कुमारी, रेखा. "ऋग्वेदीय अग्नि वेदान्तक सूक्तों में प्रतिपादित वैज्ञानिक तथ्य." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिन्दी रिसर्च (2017): 62-65.

जावेद, डॉ सीमा. "एशिया के वाटर टावर से लेकर ग्रेट बैरियर रीफ तक खतरे में है." दैनिक भास्कर (2022): 8.

जिल लेंगलोइस, साओ पालो. "ब्राजील की 91 वर्षीय फोटोग्राफर अमेजन के वर्षा वनों को बचा रहीं." दैनिक भास्कर (2023): 10.

जोशी, डॉ अनिल प्रकाश. "प्रकृति को बचाने के लिए हमें अपनी प्रवृत्ति सुधारनी होगी." दैनिक भास्कर (2022): 8.

डॉ. सत्येंद्र प्रकाश, राघवेंद्र प्रकाश. "समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चिंतन का अनुशीलन." (2017): 112-115.

तिवारी, प्रो श्रुति. " हर साल हो पौधों का ओडिट, अलग से बने मास्टर प्लान, जिम्मेदारी भी तय हो, तभी बचेगा शहर का ग्रीन बेल्ट." दैनिक भास्कर, (2022): 1.

तिवारी, सुशील कुमार. "केदारनाथ सिंह के काव्य में पर्यावरणीय चिंता." (2016): 9.

दुबे, अभिषेक. "प्रकृति के बीच इंजीनियरिंग की क्लास ,SGSITS ने रिनोवेशन वर्क में 100 साल पुरानीईमारत टूटने से बचाकर उसे बना दिया नेचर क्लब,." दैनिक भास्कर (2022).

नुजेंट, सिआरा. "यूरोप में पर्यावरण की रक्षा के लिए कंस्ट्रक्शन कम करने का अभियान." दैनिक भास्कर (2022): 10.

पटनायक, देवदत्त. "लौकिक और दैवीय संसार के बीच एक मध्यस्थ हैं अग्नि देवता." दैनिक भास्कर रसरंग (2023): 20.

भास्कर न्यूज, झाबुआ. "८७० करोड़ लीटर वर्षा जल हर साल सहेज रहे, १६० माता-वन में खड़े कर दिए पाँच लाख से अधिक पेड़." दैनिक भास्कर (2023): 9.

भास्कर न्यूज़, भुज. "गुजरात:कच्छ में हो रही मशरूम में दुर्लभ ऐस्टेटिन , यह कैंसर इलाज में उपयोगी." दैनिक भास्कर (2023): 14.

यादव, किरण यादव. "महाकवि कालिदास का मानव जीवन एवं प्राकृतिक वर्णन का तुलनात्मक अध्ययन." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिंदी रिसर्च (2017): 1-5.

रघुरामन, एन. "पानी अगला खतरा और अगला अवसर भी." दैनिक भास्कर (2023): 9.

रानी, डॉ आशीष. "रोग निदान में मददगार फल." दैनिक भास्कर (2022).

रिसर्च, भास्कर. " एक इलेक्ट्रिक कार बनाने में लगभग ४ हजार किलो घातक कचरा और ९ टन कार्बन पैदा होता है, १३ हजार लीटर पानी भी खर्च होता है." दैनिक भास्कर (3 जुलाई 2022): 1.

लिमिटेड, द इकोनॉमिस्ट NEWSPAPER. "प्रदूषण से भारतियों की आयु सात साल तक काम हुई ; अर्थव्यवस्था की तीन लाख करोड़ रूपए का नुकसान." दैनिक भास्कर (2023): 2.

शर्मा, अनिरुद्ध. "कहाँ गया वसंत ? सर्दी बीतते-बीतते फरवरी में ही तापमान १५ मार्च जैसा." दैनिक भास्कर (2023): 1.

श्रोती, वंदना. "प्रदेश का पहला ऐसा पार्क बनेगा एकांत जहाँ बढ़ेगा ऑक्सीजन इंडेक्स और दूर होगा वाटर पॉल्यूशन." दैनिक भास्कर (2022): 5.

संवाददाता, भास्कर. "जीवों की रक्षा का घोषणा पत्र इंदौर से होगा जारी, देशभर के पर्यावरणविद जुटेंगे ." (2022).

—. "ये अच्छा आईडिया है ! आबोहवा सुधारने १०० बगीचे बनाएंगे ." दैनिक भास्कर (2022).

—. "हम सफाई के विश्व गुरु! फ्रांस में दिखाई जाएगी स्वच्छता की तस्वीरें, 7 देशों के 21 सदस्यों ने शहर देखा, बोले- अब प्रदूषण ख़त्म करने पब्लिक ट्रांसपोर्ट अपनाए इंदौर." दैनिक भास्कर (2022): 2.

—. "हरियाली का ३०% हिस्सा शहरी वनों के रूप में तैयार हो." दैनिक भास्कर (2022).

सिटी रिपोर्टर, इंदौर. "मान्यता है कि गोंड स्त्री गोदना न करायेतो मोक्ष नहीं मिलता." दैनिक भास्कर (2023): 2.

सी. एस. मुखोपाध्याय, पी. एन. द्विवेदी , जे. एस. अरोड़ा, रमणीक वर्मा. "भारत में बढ़ता हुआ जल अभाव :सूखे की दशा से निपटने के लिए कृषि गतिविधियाँ." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिन्दी रिसर्च (2017): 5-8.

सेन, प्रो जॉय. "मकर संक्रांति पर सूर्य की गति बढ़ने से बढ़ती है हमारी ऊर्जा." दैनिक भास्कर (2022): 2.

—. "सांसों के साथ औषधि, शांति और ख़ुशी देते पेड़, इसलिए पूजनीय." दैनिक भास्कर (2022): 2.

सेन, प्रो. जॉय. "ऊर्जा के केंद्र बिंदु पर बनते हैं मंदिर, मिलती है आत्मशांति." दैनिक भास्कर (2022).

—. "हम धर्मस्थलों पर जाते हैं क्योंकि ऊर्जा के केंद्र बिंदुओं पर बनते हैं मंदिर, मिलती है आत्मशांति." दैनिक भास्कर (7 अगस्त 2022): 2.

हैरी, प्रिंस. "आपके पास मौका है लोगों के विचार बदलने का, इसे बेकार न जाने दीजिए." दैनिक भास्कर (2023): 5